Yuvadrishti

An offering at the lotus feet of our Divine Mother by the Yuvashakti

Volume 4
Issue 3

September
2003

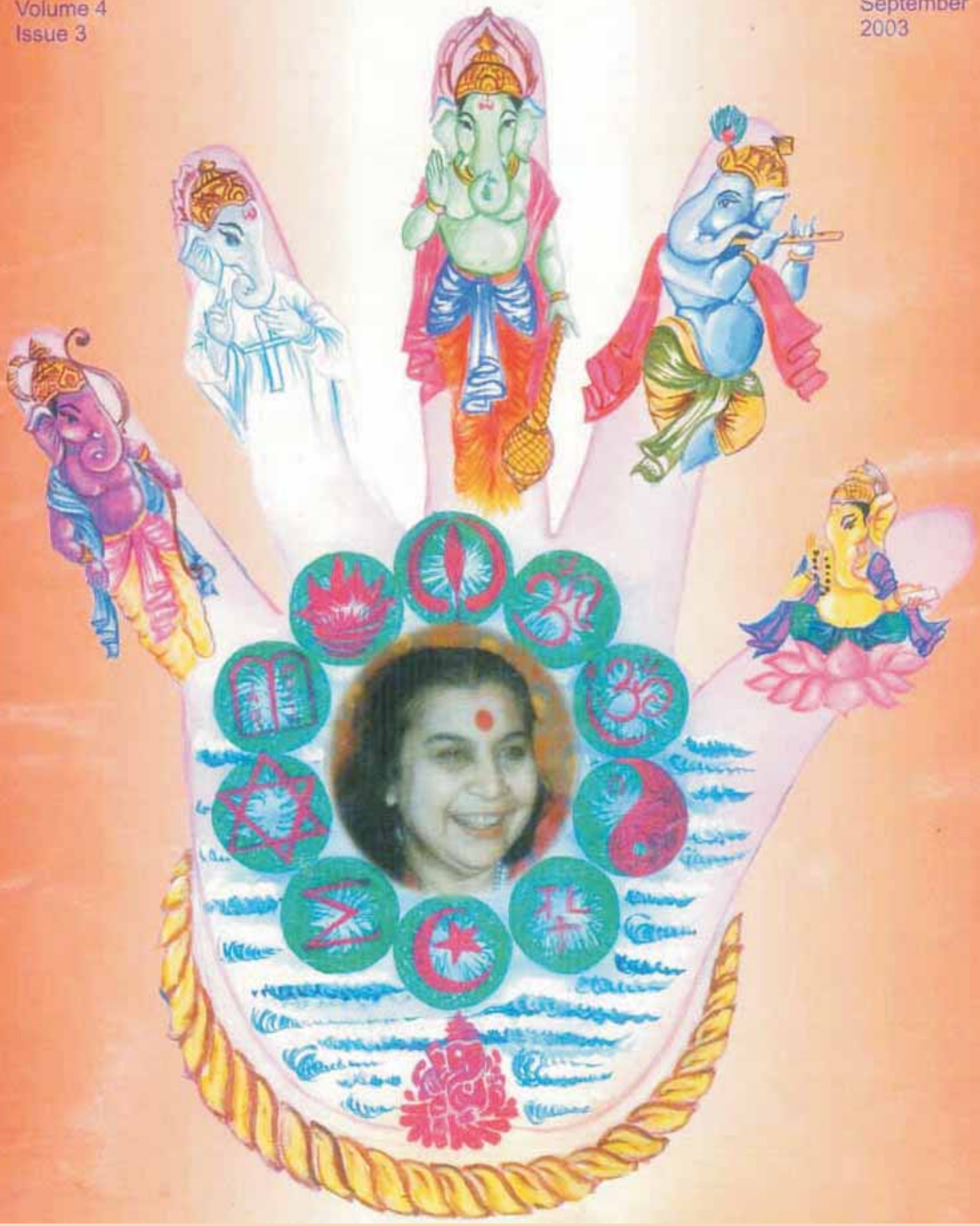

Contents...

भक्ति और शक्ति का संतुलन 2
- हनुमान पुजा १९९१, पुणे

"सबका मालिक एक" 4

हल्दीघाटी के योद्धा 7

Tere Ishk Nachaya,
Karke Thayyan Thayya 10

माहूर पीठ 13

The Divine Feminine
In Islam 15

उल्टा कुँआ – संत कबीर 18

Cover page & Sketches : Nitya Sapte

शक्ति और भक्ति का संतुलन

– हनुमान पुजा १९९१, पुणे.

"....हनुमानजी के अनेक किस्से हैं जिनमें उन्होने सिध्द कर दिया कि वे प्रेम का सागर हैं; और उसी वक्त जो दुष्ट हो, जो दुसरों को सताता है, जो दुसरों को नष्ट करता है उसका वध करने में उनको बिल्कुल किसी तरह का संकोच नही है।..."

"....वो जानते थे कि रावण सिर्फ आग्नि से डरता है । इसलिये वह लंका गए और लंका दहन कर दिया । ये उनकी शक्ति की बात है कि उन्होने लंका दहन कर दिया । और उस दहन में किसी को मारा नही, किसी को जलाया नही । रावण भी जला नही । कोई नही जला । पर उससे दहशत हो गई (बहुत) । लोग घबरा गए कि रावण ये क्या पाप कर रहा है । रावण जो इस तरह के कार्य कर रहा था, पहले लोगो मे संमत था । वो कहते भाई ये रावण ही है; जो है सो है । इसकी इच्छा जो है, इसको जो करना है सो करने दो, हम इसको कहने वालें कौन होते है? रावण तो रावण ही हुआ, लेकिन जब; कितनी समझदारी की बात है कि जब लंका जल उठी , जब लंका का दहन हो गया, तब लोग समझ गए कि ये तो बडी खतरनाक बात है, बडी घबराने की बात है । क्योकि लंका दहन हो गया, और अगर हम लोग जल गए होते तो ? अब आग की विशेषता यह है कि वह उपर जाती है, नीचे नही आती । सब लोग नीचे से उपर देख रहे थे कि जल रही है, जल रही है, जल रही है । पर पुरा लंका दहन हो गया लेकिन कोई जला नही । ये डराने के लिये नही, उनको समझाने के लिये कि रावण महापाप कर रहा है, उन्होनें ये काम किया । कितनी समझदारी और कितना संतुलन बजरंग बली में था, ये देखना चाहिये ।...."

"...यही हम देखते हैं इतिहास में भी । जितने लोग शक्तिशाली बहुत थे, उनमें अत्यन्त प्रेम था । गर आप देख लीजिये तो शिवाजी महाराज का एक उदाहरण है, कि वो इतने शक्तिशाली थे और उतने ही, बहुत तमीज़दार, बहुत कायदे के और बहुत ही ज्यादा संयमित आदमी थे। ये संतुलन जब आप में आ गया तब आप सहजयोगी हैं । गर आप के अंदर शक्ति आ गई, इसका मतलब ये नही कि आप अपने प्रेम और व्यवहार; उसको किसी तरह से त्याग दें ।...."

".... ये जो आपके अन्दर शक्तियाँ आ गई हैं, इसका इस्तमाल इसी लिये करना चाहिये कि जिससे, जो दुष्ट हैं वो खत्म हो जाए। लेकिन आप की शक्ति हाथ में तलवार या गदा नही हनुमानजी जैसे; बाह्य में गदा नही है, पर अन्तर में है।..."

"....आपको पता नही कि वो आप के आगे – पीछे खडे हुए हैं। है तो उनका (श्री हनुमानजी का) स्वभाव बच्चों जैसा; बहुत निर्मल और बहुत सरल, लेकिन इतनी समझदारी; और हर तरह की खूबीयाँ वो जानते हैं। इसका मतलब है कि उनकी शक्ति के साथ उनके अन्दर नीर – क्षीर वीवेक बहुत था। बडे ही बुद्धिमान थे। आजकल की बुद्धि तो बिलकुल बेकार है; पर वो बुद्धि कि जो प्रेम से हरेक चीज को जाँचे, और समझे; उस बुद्धि के एक विशेष स्वरूप श्री गणेश थें और श्री हनुमान हैं। दोनो मे विशेषता ऐसी है कि हनुमानजी बहुत बलिष्ठ, बहुत तेज, ऐसे देवता हैं और श्री गणेश ठंडे हैं। लेकिन दोनों जब वक्त पडता है; तो बहुत बडे 'संहारक'। सहज योगियों को संहार करने की जरूरत नही। किसी का संहार करने की जरुरत नही; बस आप ये सोच लीजिये कि आप के साथ ही ये दोनों हर पल हर क्षण है। जब भी आप को कोई परेशान करे, तंग करे, तो साक्षात आपके संरक्षक आपके साथ खडे हैं।...."

"...सहज योगियों की security उनके साथ ही चलती है। और दूसरी security जो चलती है वो है गणों की। अब इनका कार्य बहुत ज्यादा विविध है; तरह तरह के, छोटे छोटे काम भी करते हैं। और यही है कि श्री गणेश को (वो गणपति है) उनको सब खबर देते हैं आपके बारे में कि क्या हो रहा है, कहाँ पे गडबड हो रहा है, कहाँ से आप पर आक्रमण हो रहा है। कहाँ से आप को तकलीफ हो रही है। आप पर हमला करना चाहे, तो भी नही होंगे, कोई आज्ञात रूप से भी आप पर हमला करना चाहे, तो भी ये दोनों देवता आपके साथ खडे हैं। और जब गणपति ये बात बता देते है; तो श्री हनुमान सज्ज हो जाते हैं । तो सहज योगियों को डरने की कोई

"Now, you have to purify your attention in such a way that you meditate within yourself, that you settle within, see what you are, see this beauty which is yours, this glory of yours, see the subtlety."

-H.H. Shri Mataji Nirmala Devi

जरुरत ही नही है। किसी भी चीज़ से डरने की जरुरत नही है।..."

"....इस आपके नए परिवर्तन से आप एक महान भक्त और शक्तिपूर्ण ऐसे इन्सान हो गए। अब किसी की मजाल नही कि आप को छू ले।..."

"...पहले भी सन्त - साधु थे। सब को सताया गया, छला गया, सब कुछ हुआ पर जितना भी लोगों ने छला या सताया, वो डिगे नही; और इतना ही नही, उनका हमेशा संरक्षण हुआ।..."

"...बस समझ लीजिये कि आपके आगे-पीछे हर तरह के संरक्षण हैं। पर इस संरक्षण के मिलते ही, मनुष्य में क्या होना चाहिये, सहज योगी में क्या होना चाहिये? वो धीर-गम्भीर और किसी से डरने वाला इन्सान नही होना चाहिये। वो किसी से भागता नही। जम जाता है उस जगह। और जो कोई भी दुष्ट आदमी है, उसके सामने डँट जाता है। उसको कुछ करने की जरुरत नही। वो जमाना गया अब। अब तो आप बस खडे हो जाएँ, वो दूसरा भाग जाएगा; उसको पता नही चलेगा क्या हो रहा है।..."

"....तो सोचना चाहिये कि हनुमानजी साक्षात हमारे अन्दर बसते हैं। वो हमारे Right side में, माने पिंगला नाडी पर काम करते हैं। पिंगला नाडी पर काम करते हैं और हमारे अंदर जोश भरते हैं। और उससे उष्णता भी आती है इन्सान में। पर उनका मार्ग ऐसा है कि आपके अंदर उष्णता भी आए और भक्ति भी साथ-साथ चले। सो जो वो उष्णता आती है, जो दोष आता है, वो हमारे अंदर Right side में काम करता है। और जब हम हनुमानजी की सन्तुलन शक्ति को प्राप्त नही करते हैं, तो हमारे यहाँ अनेक बीमारियाँ आ जाती हैं।...."

"....हनुमानजी गर्मी को control करते हैं। पर जब ये गर्मी नीचे जाती है, तो ऐसी-ऐसी बीमारियाँ होती हैं, जिनका कोई इलाज नही हो सकता।...."

"....कभी गर हमें गुस्सा आया; कोई जरुरत नही है गुस्सा आने की, पर आया गुस्सा तो लगे मारने-पीटने इसको उसको, हंगामा करने; ये फिर हनुमानजी की शक्ति नही है। कोई गुस्सा करने की बात ही नही है। किसी पर नाराज़ होने की बात ही नही है। जरुरत ही नही है: अगर आप हनुमानजी को मानते हैं तो। वो किसी पर गुस्सा नही करते।..."

"....सहज योग में आने पर आपको समझना चाहिये कि हनुमानजी का आप के सामने एक आदर्श है। गणेशजी का है ही, वो तो अबोधिता के बिल्कुल अवतार है: जैसे छोटे बच्चे होते हैं, वेसे ही भोले-भाले हैं; लेकिन बुद्धि के बहुत चाणक्ष हैं। और हनुमानजी के अन्दर एक सन्तुलन, एक प्यार भरा आनन्द, और उसी के साथ-साथ शक्ति दर्शन। ये सब चीज़ो को समझते हुए एक सहज योगी का जीवन ऐसा होना चाहिये कि बिल्कुल संतुलित। आपको जब गुस्सा भी आता है तो आप चुप हो कर देखिये।..."

"....अब जो इन्सान कार्य करता है, बहुत आगे की सोचता है और बहुत विचारक है, सब है; पर प्रेम नही है, सब के प्रति प्रेम की भावना नही है, उसको भी इसकी तकलीफ होती है।..."

"....गर आप बडे कार्यकर्ता है; बहुत बढिया आदमी हैं, सब कुछ हैं, लेकिन आपको सबके प्रति प्रेम नही है: चलने नही वाला। सबके प्रति प्रेम रखना। और इसी लिये ईसा मसीह ने कहा है, कि सबको माफ करिये। आप कौन होते हैं माफ ना करने वाले। जहाँ गर्मी हुई, लोगों की खोपडी खराब हो जाती है, और प्यार का मज़ा टूट जाता है।...."

Kaushik Panchal
RATILAL & SONS
All kind of Textile Accessories
Ahmedabad.
Ph. 2748183 (O)
3739017 (R)

"सबका मालिक एक"

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥"
–भगवान कृष्ण, भगवत्गीता

Lord has sent his saints and sages in different forms, who are his representatives and who appear at proper times. When spiritual preceptors are not respected but humiliated, when there is an overall decay in moral standards, when under the cloak of religion, people belonging to different sects fight among themselves, thus turn away from the true path of salvation, then do saints and incarnations appear and try to correct things by their power of love. One such incarnation who blessed human race was Sai Baba.

The primordial master, "the teacher", often visited us to guide our race on the central path of dharma. Lord Dattatreya led mankind through the void of the ocean of illusion. He incarnated many times as Raja Janaka, Abraham, Moses, Zarathustra, Socrates, Confucius, Lao-tze, Mohammad, Guru Nanak. His last incarnation manifested in the human form of Shri Sai Baba of Shirdi. The ten incarnations of the primordial master mark the perimeter of Void in our subtle system for the seeker, in the same way that the lighthouses on the coast light up the way for the navigator. The primordial master's location in our body corresponds to the void between the parasympathetic vagus nerve and solar plexus.

Photograph taken in 1916

Shri Sai Nath expressed in words:

"I am god, I am Mahalaxmi, I speak the truth, sitting as I do in the mosque. I am Vithoba, I am Ganpati. All offerings made to Ganpati have reached me, I am Dattatreya. I am Laxmi Narayan. Why go for Ganga elsewhere, hold your palm at my feet, here flows Ganga. I am Maruti."

In this statement Shri Dattatraya incarnate clearly hints at the oneness of the virata and at the flow of vibrations that, we have experienced at the Lotus Feet of H.H. Shri Mataji Nirmala Devi.

" I give the people what they want in hope that they will begin to want what I want to give them. "

- Shirdi ke Sainath.

Sai Nath was born into the Indian culture which has the history and tradition of great saints and gurus, especially in the state of Maharashtra. Sai is a Persian word meaning 'Saint' and baba is a Hindi term of endearment and respect meaning 'father'.

It is thought that he was born to a middle class Brahmin family in the state of Hyderabad (now Andhra Pradesh). His parents died while he was young and a Muslim fakir gave him shelter. A few years later, the fakir who was a spiritual person died and Sai Nath learned under a Hindu guru, whom he called 'Venkusa of Selu'.
Sai Nath is believed to be born in 1856, and first came to Shirdi as a lad of 16, living under a Neem tree with a begging bowl as his sole possession. Shirdi, which Sai Nath chose to be his abode, is situated in Maharashtra almost on the banks of holy Godavari River, in the vicinity of Ahmednagar.

Sai Nath emphasized the beauty of a life guided by a guru. He said that without the subtle intimacy and guidance of the guru, limitations can not be transcended and ones own self is over shadowed by ego. A firm faith in a guru according to Sai Nath is the highest sadhana. Surrendering to the divine would reveal ones true life.

Sai Nath had a way of touching the head of the devotee who went to him, sometimes he pressed his hand heavily on the head as though crushing out some of the lower impulses of the devotee. All of his actions, be it grinding flour, washing pots, even smoking at times were for sucking in the badhas of his disciples. From the fire, Sai Nath sat by, he gave 'udhi' (sacred ash) for most cures. The remarkable healing power of this udhi is very famous. The fire element has tremendous powers of clearing, and Sai Nath perpetually kept this fire lit specifically for this reason. This fire till date continues to burn in Shirdi.

VANADEVI
Ayurvedic Health Products Pvt. Ltd.
E-mail:vanadeviayur@rediffmail.com
8, Chandragupt Soc.,
Paud Road, Kothrud, Pune.
Tel. : 5286722, 5286135

Sai Nath used to light oil lamps in the mosque he resided. This oil he used to get from the shopkeepers. Once the shopkeepers, to have some fun refused to give him oil. Baba without any complaints returned to the mosque. The shopkeepers followed him to see what he would do without the oil. Baba nonchalantly poured water from an earthen pot into the lamps and lit them, the lamps burned with water as they did with oil. Seeing babas control over nature's elements the shopkeepers were filled with awe, and felt terribly sorry about their mischief. They recognized Baba and humbly prostrated at his feet.

Sai baba lived in Shirdi for about 60 years and during this long period he used to grind wheat in a hand mill, almost everyday. This grinding, it appears, had philosophical meaning attached to it. Grinding it was, but not of wheat alone, but also of sins, mental and physical afflictions and the miseries of human beings. The two stones of his mill consisted of bhakti and karma, former being the lower one and latter the upper one. The handle with which baba worked the mill signified gyan (knowledge). It was babas' firm conviction that knowledge and self realization is not possible unless there is a prior act of grinding all our impulses, sins, desires and ahamkara which is so subtle and therefore so difficult to get rid of.

Once when cholera epidemic was on a rise in the villages surrounding Shirdi where baba resided, he asked his devotees to take the flour that he grounded himself out of wheat and spread it around the border limits of the village. Subsequently the epidemic did not enter Shirdi and it slowly subsided. Although it appears to be a miracle, but it was only a natural working of Baba's love.

Baba never fasted himself, nor did he allow others to do so. He believed that the mind of a person who fasts is never at ease, then how could he attain his parmarth (ultimate goal)? God is not attained with an empty stomach. First the soul has to be appeased. If there be no moisture of food in the stomach and nutrition, with what eyes would we see God? With what tongue would we describe his greatness? And with what ears would we hear the same? In short, when all our organs get their proper nutrition and are sound we can practice devotion and sadhana to attain god. Therefore neither fasting nor overeating was encouraged by Sai Nath. Moderation in diet, he said, is really wholesome, both to the body and mind.

It is also noticeable that Sai Baba did not wish his followers to renounce the world and go forth as sanyasis. The general interest he showed in the family life and problems of his devotees, their jobs, marriages and children, is clear evidence that he wished them to develop inwardly through the medium of family life.

Sai Nath lived in the times when India's freedom movement was on a move. Freedom of Bharat Mata from the clutches of British rule was not only politically significant but also had tremendous spiritual significance. Later, it was from this land that light of spirituality had to propagate in the whole world. British rule of that time employed the corrupt ways of dividing the Indians on the grounds of religion and thus attempted to suppress the freedom movement. Sai Nath, who had followers from both religions,

Continued on pg. 14.....

"दूसरों के दोषों के विषय में सुनना सहजयोग में अपराध है। हमें ध्यान देना चाहिये कि कितनी मधुरता से हम बोल सकते हैं।"

Shri Y.P. Singh

C-316 A, Sector 10,
Noida

हल्दीघाटी के योद्धा

विधाता बहुत कम लोगों को आजीवन संघर्ष की नियति प्रदान करता है। मेवाड के महाराणा प्रताप की नियति में कुछ ऐसा ही था। वे उन में से थे जो काल के सर्वग्रासी सामर्थ्य का तिरस्कार करते हुए आज भी अपनी विमल कीर्ति अक्षुण्ण बनाये हुए है। वे जन्मतः आत्म-साक्षात्कारी थे।

महाराणा उदयसिंह की पटरानी जयवन्ती से जन्मे प्रताप ज्येष्ठतम पुत्र होने के कारण परम्परा के अनुसार युवराज और भावी महराणा थे। जयवन्ती स्वभावतः ही सात्विक व वीरों का सम्मान करने वाली थी।

प्रताप बचपन से ही गहन, विनम्र तथा सूझ थे। तेजस्वी प्रताप युवा होने तक सैन्य संचालन तथा शस्त्र विद्या में पारंगत हो, अप्रतिम योद्धा बन गए थे। शारीरिक रूप से भी वे अत्यंत शक्तिशाली थे। (उदयपुर के संग्रहालय में एक लौह कवच सुरक्षित रखा है; ये कवच महाराणा प्रताप युद्ध में पहनते थे। जिसका वजन लगभग १४० किलो तक है। आज के समय में शायद ही कोई इस भारी-भरकम कवच को पहनकर चल भी पाए।)

प्रताप अत्यन्त शूर तथा बुद्धिमान होने के साथ ही साथ अत्यंत विनम्र होने के कारण प्रजा तथा दरबार में सामंतों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय थे। लोग उन पर अपनी जान छिडकते थे।

महाराणा उदयसिंह की मृत्यु के समय घटित कुछ घटनाक्रम के परीणाम स्वरूप उनकी मृत्यु के पश्चात प्रताप के सौतेले भाई जगमल का महाराणा बनना तय हुआ।

इन घटनाक्रम के विषय में विभिन्न स्रोतों से भिन्न-भिन्न मत मिलते हैं। कुछ के अनुसार प्रताप भावनावश पिता की अर्थी के साथ गढ से बाहर चले गए, जो कि मेवाड की परम्परा से हट कर था। परम्परा के अनुसार मेवाड के शासक भगवान एकलिंग माने जाते थे तथा महाराणा उनके दीवान माने जाते थे। महाराणा की मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारी को गढ में ही रहकर महाराणा का पद संभालना होता था, अतः नए महाराणा अपने पिता के अंतिम-संस्कार में शामिल नही हो सकते थे। कुछ और स्रोतों के अनुसार उदयसिंह अपनी दुसरी पत्नी से अधिक प्रेम करते थे, अतः उन्होनें उससे हुए पुत्र जगमल को मृत्यु से पहले अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। जगमल आरामप्रिय तथा विलासी प्रकृति का था। अतः उसके महाराणा बनने की बात से सभी को सदमा लगा।

किन्तु सामन्तों ने एकजुट होकर निर्णय लिया। वे महल में गए और राजसिंहासन पर बैठे जगमल का हाथ पकडकर उसे उठाते हुए कहा, "छोटे भाई होने के कारण आपका स्थान राजगद्दी के सामने है।" इसके बाद प्रताप का राज्याभिषेक हुआ।

इसमें सामन्तों का विवेक लक्षित होता है। परम्पराओं को तोडते हुए, हित ध्यान में रख कर, उन्होनें एकजुट हो मेवाड के हितार्थ प्रताप के महाराणा बनने का मार्ग प्रशस्त किया। राज्याभिषेक के बाद प्रताप महाराणा तो बने, किन्तु उनका जीवन किसी महाराणा के बजाय वनवासी की तरह अधिक बीता। दृढ चरित्र वाले तथा गणों द्वारा सुरक्षित जन्मतः आत्मसाक्षात्कारी महाराणा प्रताप नें आजीवन संघर्ष किया और परतंत्रता कभी स्वीकर नही की। इसीलिए इतिहास में उन्हें स्वतंत्रता का अनन्य पुजारी कहा, तथा स्वीकारा जाता है। उनका शत्रु भी उनका सम्मान करता था। वो चाहता था कि महाराणा उसके अधीन हो कर उसकी फौज का नेतृत्त्व करे। अगर महाराणा प्रताप अपने जीवन में कभी भी उसकी बात मान लेते तो सारे दुःख दूर हो कर वे पूर्णतः आराम-भरा जीवन व्यतीत कर सकते थे। किन्तु जीवन अत्यन्त कठिन हो जाने के बाद भी महाराणा प्रताप नें स्वतंत्रता को सर्वोच्च माना।

प्रताप को विरासत में मेवाड का छोटा सा भाग मिला था। राजपूताना के अन्य सभी राज्यों द्वारा अकबर की अधीनता स्वीकार कर लेने के कारण मेवाड चारों ओर से विरोधियों से घिरा हुआ था। अकबर बादशाह की साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षाओं के रास्ते में आने वाली हर वस्तु/व्यक्ति को वो निर्ममता से कुचल देता था। किन्तु अकबर को बहुमूल्य वस्तुओं / लोगों की कद्र करने के लिए भी जाना जाता है। महाराणा प्रताप की वीरता तथा चरित्र वो भी जानता था, और चाहता था कि राजपूताना का सबसे वीर पुरूष उसकी सेना का नेतृत्त्व करे। इसलिए अपनी अधीनता स्वीकार कर चुके कई राजपूतों को उसने महाराणा को

समझाने के लिए प्रस्ताव लेकर भेजा। ये प्रस्ताव समझौते ना होकर अधीनता के होते थे।

उदयसिंह के शासन काल में शहंशाह अकबर ने आक्रमण कर मेवाड के प्रतीक चित्तौडगढ को घेर लिया था। पाँच माह के पश्चात जब गढ अन्न-जल आदि से रिक्त होने लगा तो राजपूत योद्धा मुगलो से अंतिम युद्ध करने की तैयारी करने लगे। लगभग तीन सौ राजपूत रमणियों नें अग्नि देवता को प्रणाम कर अपनी पवित्रता की रक्षा के लिये स्वयं जौहर कर लिया। उधर राजपूत वीर भी युद्धभूमि में प्राणोत्सर्ग का संकल्प लेकर गढ के बाहर निकल शत्रु पर टूट पडे तथा उनका संहार करते-करते स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हुए।

गढ में प्रवेश करने के बाद अकबर को ना तो राजकोष मिला, ना उदयसिंह, ना उनका रनिवास। विक्षुब्ध होकर उसने दुर्ग में मिलने वाले हर आदमी को कत्ल करने का हुक्म दे दिया। कहा जाता है कि इसके बाद तीस हजार अबाल-वृद्ध, नर-नारी नृशंसतापूर्वक मार दिये गए। ये सभी चित्तौड के नागरिक अथवा आस पास के गाँवो से दुर्ग में शरण लेने आए हुए लोग थे। इससे भी क्रोध शांत ना होने पर अकबर नें आसपास के प्रसिद्ध पूजन स्थानों को ढहाकर मिट्टी में मिला दिया।

चित्तौड में हुए इस तीसरे जौहर, अनेक श्रेष्ठ वीरों के मातृभूमि के लिये किये बलिदान तथा अकबर के हुक्म से हुए इस नृशंस कत्ले-आम ने प्रताप को झकझोर ही दिया था। ऐसे क्रूर हत्यारे और मानवता के शत्रु से तो मित्रता भी पाप थी, तो उसकी और अधीनता स्वीकार करना तो कल्पना से भी परे था।

अकबर से युद्ध होना अवश्यम्भावी जान, महाराणा प्रताप राजसी जीवन का त्याग कर चुके थे। सोने-चांदी के बर्तनों में भोजन करना बंद कर दिया और अपनी सेना के सैनिकों जैसा सादा जीवन बिताना शुरू कर दिया। अपने योद्धाओं की तरह ही वे ठोस जमीन पर सोने लगे। उन्होने प्रण किया कि जब तक पूर्ण मेवाड स्वतंत्र नही होता, वे ऐसा ही जीवन व्यतीत करेंगे।

आक्रमण हुआ । मुगल फौज का सेनापतित्त्व एक राजपूत, मानसिंह कर रहा था। यह फौज संख्या में महाराणा प्रताप की सेना से कई गुना अधिक थी। हल्दी घाटी के युद्ध के कुछ दिन पहले मानसिंह थोडे से सैनिकों के साथ शिकार करने निकला। सूचना मिलने पर महाराणा प्रताप को अरक्षित मानसिंह को पकडने / मारने का परामर्श दिया गया। किन्तु धर्म परायण महाराणा ने परामर्श अस्वीकार कर दिया। ये उनके विश्वास, दृढता तथा स्थिरता का सूचक है। नाथद्वार से पंद्रह किलोमीटर दूर, गोगुंदा और खणौर के मध्य, मेवाड की सीमा में दुर्गम पहाडी घाटियाँ है। यहाँ की मिट्टी हल्दी की तरह पीले रंग की है। इसलिये इसे हल्दी घाटी कहा जाता है। मेवाड की सेना ने यहीं पर मोरचा जमाया। १५७६ के जून माह की भीषण गर्मी में हल्दी घाटी का युद्ध हुआ। लगभग तीन घंटे की अवधि का हल्दीघाटी का युद्ध विश्व का सबसे कम अवधि का सबसे भयानक युद्ध था। प्रारंभ में, प्रबल मेवाडी आक्रमण से मुगल सेना के पैर उखड गए। किन्तु एक झुठी मुनादी करने से कि खुद अकबर बडी फौज लेकर आ रहा है, भागते हुए मुगल सैनिक फिर से लढाई करने लगे। इस घमासान युद्ध में महाराणा प्रताप शाही सेना के मध्य हाथी पर सुरक्षित बैठे मानसिंह के सामने जा पहुँचे। मौका पाते ही उनके प्रिय तथा अत्यन्त प्रसिद्ध व स्वामीभक्त घोडे चेतक ने अपने अगले पैर हाथी के मस्तक पर टिका दिये। किन्तु मानसिंह महाराणा के वार से बच गया और महाराणा चारों ओर से शत्रुओं से घिर गए। घमासान युद्ध में निरन्तर प्रहारों से महाराणा और चेतक जर्जर हो चले थे। महाराणा के प्राण संकट में देख झाला मान तलवार से रास्ता बनाते हुए वहाँ पहुँचे और महाराणा का छत्र-चंबर छीनकर अपने सिर पर रखते हुए उन्हें सुरक्षित निकल जाने की शपथ दे कर शत्रु पर टूट पडे। और वीरता से लढते हुए वीर गती को प्राप्त हुए। महाराणा प्रताप को झाला मान की शपथ के कारण तथा मेवाड के हितार्थ युद्ध से जाना पडा। बुरी तरह घायल चेतक अपने स्वामी को सुरक्षित दूरी पर पहुँचाने के बाद चल बसा।

'मुन्तुखुब तवारीख' का लेखक अलबदायूँनी भी युद्ध में मुगल सेना की ओर से शामिल था। इस बीच महाराणा प्रताप के साथ मुगल फौजों के युद्ध की बात चारों ओर फैल चुकी

"आपके अन्दर सारी शक्तियां हैं जिन्हें अब आपको धारण करना है। एक बार जब आप इन्हें धारण करने लगेंगे तो आप हैरान रह जायेंगे कि एक संत, एक गुरु, एक व्यक्ति जिसे अपने गुरुत्व का आभास है, उसके सम्मुख कोई नहीं खडा हो सकता।"

INDORE HOUSING

'A' Class Construction of Bungalows by qualified engineers as per IS-Code of Civil Engineering.

Indore.
Ph. 0731- 2490953, 2490128

"राणा प्रताप एक बार जरा चूक गए क्योंकि बहुत परेशानी में थे। उनकी लडकी के लिए घाँस की रोटी बनाई, वो तक एक बिलाव उठा कर ले गया। इस को देख कर के; कहाँ राणा प्रताप जैसा आज कोई आदमी है? आपकी politics में, सब चोर बैठे हैं। तो जब वो उठा कर ले गई; बिल्ली, तो राणा प्रताप के मन में आया और वो चिट्ठी लिखने बैठे, शहंशाह को, कि मै आपके शरणागत हूँ। जैसे ही उन्होनें पढा, उनकी बीवी ने, उन्होनें भाला उठाकर लडकी को मारने के लिये दौडी। तो कहने लगे ये क्या कर रही हो? तो कहने लगीं कि इसको ही मार डालती हूँ जिसकी वजह से तुम ये सोच रहे हो। ये हमारे देश की औरतों का चरित्र है।.... लेकिन सहज योगियों की औरतें इसी तरह की होनी चाहिये और मर्द भी इसी तरह के होने चाहिये।"

सहजयोगियों के लिए भारतीय संस्कृति एव सभ्यता का महत्त्व, दिल्ली आश्रम, २७-३-८६

थी। युद्ध के बाद वापसी के समय लोग बदायूँनी को रोककर उससे हल्दीघाटी के युद्ध के बारे में पूछताछ करते रहे। बदायूँनी ने लिखा है कि जब वह कहता कि महाराणा परजित हो गए, तो उसकी बात पर विश्वास करने के लिये कोई तैयार नही होता था। राजपूताना में मानो कोई महाराणा प्रताप के पराजित होने की कल्पना भी नहीं कर सकता था।

शाही फौज की विशालता तथा उनके अपार साधनों को देखते हुए महाराणा ने युद्ध नीति में परिवर्तन किया। सम्मुख युद्ध की जगह छापामार युद्ध करना शुरू किया। किन्तु विशाल मुगल फौजों ने एक-एक करके मेवाड के सभी ठिकानों पर कब्जा कर लिया। महाराणा तथा उनके वीर सथियों को अरावली पर्वत श्रृंखला के पर्वतों तथा वनों में शरण लेना पडी।

जैसे ही मेवाड की मुहिम पर आया हुआ मुगल सरदार वापस जाता, महाराणा फिर सक्रिय हो जाते और अपना क्षेत्र फिर जीतना शुरू कर देते। मुहिम का प्रमुख उद्देश्य महाराणा को कैद अथवा समाप्त करना होता था। इन मुहिमों में सिपहसालार 'प्रताप नही तो मेवाड नही' जैसे क्रूर संकल्प भी लेकर आते थे, जिनके अंतर्गत आगजनी तथा हत्याकांडो का दौर शुरू कर दिया। लेकिन संकल्पित-समर्पित मेवाडी भीलों, मीणों आदी से महाराणा के विषय में कुछ भी न जान सके। कई बार ये विशालकाय तथा साधनसंपन्न फौजें महाराणा को पूर्णतः घेरने में भी सफल हो जाती किन्तु महाराणा चमत्कारिक ढंग से बच जाते। महाराणा प्रताप भी जानते थे कि गण उनके साथ है और वे ही उनकी रक्षा करते हैं।

महाराणा का शक्तिशाली चरित्र एक और घटना से उजागर होता है। अकबर के दरबारी मिर्जा खाँ (अब्दुर्रहीम खान खाना के नाम से प्रख्यात) अपने दल के साथ अजमेर से सिरोही आया। एक बार मिर्जा के शिकार पर गए होने की सूचना पाकर महाराणा के पुत्र कुँवर अमर सिंह ने हमला कर उसके ठिकाने को लुटने के साथ ही मिर्जा के जनानखाने को भी बन्दी बना लिया। किन्तु महाराणा नें उन्हें बहनों का दर्जा दिया और अमर सिंह को खुद उन्हें ससम्मान वापस छोड कर आने का निर्देश दिया। हलाँकि वे जानते थे कि इसमे अमर सिंह के लिए खतरा हो सकता था। इस घटना का मिर्जा पर गहरा प्रभाव पडा और उसने महाराणा के विरूद्ध किसी भी मुहिम में भाग न लेने का प्रण कर अपना तबादला करवा लिया। इस बीच महाराणा, उसके परिवार तथा सेना को कठिनतम परीक्षाओं का सामना करना पड रहा था। इसी विषय में एक घटना बहुत प्रसिद्ध है। वनों में खाने के लिये केवल जंगली फल, कंद अथवा घाँस की रोटी (घांस के छोटे-छोटे बीज पीसकर उसके आटे से बनी रोटी) ही उपलब्ध थे। जब एक बार उनकी भूखी बेटी के हाथ से एक बिलाव एकमात्र घाँस की रोटी भी छीनकर ले गया और वो रोने लगी, तो महाराणा को लगा कि अगर वे अकबर से संधि कर लें तो उनकी सन्तान-समान प्रजा, सेना, परिवार तथा सम्पूर्ण मेवाड के कष्ट दूर हो जाएँगे। श्रीमाताजी ने 'भारतीय सभ्यता और सस्कृति के महत्त्व' पर दिये भाषण में इस घटना के विषय में बताया है।

दस वर्षों तक निरन्तर सैनिक अभियानों मे करोडों रूपये और हजारो सैनिकों की आहूती देने के बाद भी महाराणा तथा उनकी सेना को समाप्त ना कर पाने से अकबर निराश था। मेवाड के कारण उसकी अन्य महत्वाकांक्षाओं की भी हानी हो रही थी। ऐसे में महाराणा प्रताप को कडवे घूँट की तरह निगलने के लिये विवश हो कर उसने मेवाड से ध्यान हटा लिया। अकल्पनीय सफलताओं की ऊर्जा से ओत-प्रोत महाराणा प्रताप पहाडों से निकल आए मेवाड का प्रायः सारा पराधीन भाग स्वतंत्र कर लिया और चावण्ड को राजधानी बनाकर मेवाड के पुनर्निर्माण में जूट गए। ग्यारह वर्षों तक शान्ति-पूर्वक मेवाड के विकास में संलग्न रहने के बाद महाराणा प्रताप का देहावसान हो गया।

महाराणा की सेना में भीलों का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा। तीर चलाने में निपुण भील महाराणा के लिये कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार थे। मन के निश्चल व सादे भील अवश्य ही महाराणा के प्रेम, विनम्रता तथा सामर्थ्य से अभीभूत हो उनके प्रति इतने समर्पित हुए होंगे। महाराणा के सैन्य मे भील नियमित योद्धा थे।

Ritu Mehra

Thank You Shri Mataji for your blessings & attention all the time and everywhere.

Tere Ishk Nachaya, Karke Thayyan Thayya

Almost all of Sahaja Yoga community is familiar with Sufi music in the form of Qawwalis. It is difficult to know if the music is more enchanting than the words. But Sufism is more than just folk music. Sufi devotion is the deepest and cleanest way to reach God by chanting His name (zikr) to achieve almost-thoughtless state (kaifiat) in the collective atmosphere (sama).

The Chistiya Sect of Sufism

Music became a major part of Sufi practices when Moinuddin Chisti came to Ajmer from Iran. Chisti saw Hindus worshipping God through the medium of music. So he went ahead and infused the tradition of singing to Allah and invoke the divine bliss. Thus Hazrat Moinuddin Chisti is the integrator of Iranian and Indian music into Chisti music. Chistis are direct descendents of Imam Hazrat Ali: The only incarnation of Shri Brahmadeva.

"They all talk about going there, but I know not where their Paradise is! They do not know the mystery of their own Self and they describe the Paradise."

- Kabir

Hazrat Nizamuddin Auliya

Nizamuddin Auliya was one of the major Sufis of the Chisti sect and is known to the world as "Dehelvi", because he lived in Delhi. Nizamuddin Auliya was one of the few who's ascent was higher than his fellow Sufi saints. He was known to have achieved the state of "Mahbubiyat: Direct connection with God in His Nirakar" Many of the yuvashaktis have discussed the benefits of getting a good education. A lesson can be drawn from an incident in Nizamuddin Auliya's life: As a student in Delhi (d. 1325) he met Baba Farid, another Sufi Saint and lecturer, and recognized Baba Farid as a true Master. He offered to quit his studies and join him as a student of spirituality, but Baba Farid gave some timeless advice: "Do both, until one of them predominates. A Sufi should have some measure of learning." Attending school or college and getting higher education is as essential for any of us.

Amir Khusro

Amir Khusro one of the four disciples of Nizamuddin Auliya to have achieved self-realization. Other three disciples got distracted from the path, even after getting it. Khusro's compositions have the quality of surrender in them, which

United Overseas Couriers Pvt. Ltd.
International Couriers
Palam-Gurgaon Road,
Dundahera, Gurgaon
E-mail: vocpl@rediffmail.com
Ph. 124-6439847,
6439877

he expressed by calling himself the bride and his divine master as the husband (Piya). Other Sufis, even males, will sing by referring to themselves as females, to bring out the quality of surrender. e.g. Khusro's couplet:

Khusrau raen suhaag ki, jaagi pi ke sung,
Tun mero mun pi-u ko, dovu bhaye ek rung.
[Khusrau (the bride) spends the eve of her wedding Awake with her beloved, (in such a way that) The body belongs to her, but heart to the beloved, The two become one.]

Apni chhab banaikay, jo main pi kay paas gayi
Chhab dekhi jab piyu ki so apni bhool gayi.
[With my beautiful face all adorned, when I went to the beloved, I saw his face, and forgot all about my own beauty.]

Sh. Suranjanji
M/s SHRI
SARVESHWARA
New Delhi

Khusrau baazi prem ki main khelun pi ke sung,
Jeet gayi to piya moray, haari, pi kay sung.
[I, Khusrau, play the game of love with my beloved, If I win, the beloved is mine, defeated, I'm beloved's.]

Sufis and the society

Sufi Shrines are found in many places in India and Pakistan in places like Kasur (Baba Bulleshah - Pakistan), Lahore (Data Ganj Baksh - Pakistan), Multaan (Rukunuddin Shah Alam - Pakistan), Delhi (Nizamuddin Auliya - India) and many more. Unfortunately the holy shrines in Pakistan have been converted to Public Mosques by the Pakistani governments to get gain popularity amongst the masses. Sufis, like any true saint or guru were condemned by the society and harassed away. Wahabis were explicitly against Sufis. These are the same Wahabis who claim to be Muslims without accepting Mohammad Sa'ab as the prophet! The reason for them hating Sufis was simple: Sufis simplified Islam for the masses and hence. Sarmad and Hallaj were Sufis who were killed by these negative forces (Sarmad's beheading is mentioned in the Qawwali - "Tum Ik Gorakh Dhanda Ho").

"यह अन्तिम निर्णय है। जो लोग सत्य को स्वीकार करेंगे, सत्य में रहेंगे और सत्य में उन्नत होंगे वे बच जायेंगे और बाकी सब नष्ट हो जायेंगे।"

Adi Guru Nanak and Kabirdasji

Adi Guru Nanak and Kabirdasji, both absorbed the Sufi mysticism into their devotion. Baba Ganj Shakar's best poems are found in Gurmukhi script in sacred Sikh texts. Baba Farid's poems are in the Guru Granth Sahib. Guru Nanak has written extensive Sufi poems, sung by the

Guru Nanakji

Kabirdasji

contemporary singer Begum Abida Parvin. During Akbar's rule, Tulsidas and Surdas were writing poetry, which can be called Sufi.

Bulleshah's story of spiritual dedication goes beyond any other: His Guru, Shah Inayat, got annoyed with Bulleshah. So he spent 12 years with dancing girls and became one of them. And then, to show that he had himself killed his ego, he dressed up, danced in the middle of a market and sang in a female voice to convince the guru of his devotion. (Tere Ishk Nachaya, Karke Thayyan Thayyan).

The Sufi singers lead a gypsy life. However, it would be wrong to assume that they were seeking God away from the society. A Sufi shouldn't be different from a Sahaja Yogi in the sense of being collective, so it is possible that they were driven away by fanatic clergy. The Sufis used to wander, but their 'mehfils' used to take place with a huge collective where the audience was also involved in the performance and they too went into trance-like states (Haal/Kaifiat) similar to thoughtless awareness.

There is so much more to Sufism than the material covered in this article. Sufism believes in clearing ourselves through Bhajans, Qawwalis and surrender. This article does not cover great Sufis like Rumi. The curious reader should read "The Female Voice in Sufi Ritual" by Shameem Abbas. Ernst and Lawrence's Sufi Martyrs of Love is a good commentary on the Chisti order of Sufism.

"सहजयोगियों के लिए बहुत ज़रुरी है कि वे कला मे उतरें और कला को समझें। आप पर सरस्वती की कृपा हमेशा बनी रहे। आत्मसाक्षात्कार के बाद अगर कला ली जाए तो बहुत ही सुघड और बहुत ही सहज हाथ मे लग जाती है।"

Mother

Have I ever wondered at
the glaze of moonlight nights
through the darkness casting
imminent shadows.

Have I questioned
who is there?
The one who inspires me
the one who whispers through
serene lights, the fragrant breeze and
memories invincible.
Whose laughter makes me euphoric
She, my panacea, my captive lady
Her anxiety my punishment
Her compassion my reward
She is like a Venus in this
Matrix of loneliness.

Have I ever seen Her?
May be may be not
But when despair surrounds me
jaws of pain pinch me
like a guillotine
Her enigmatic emotions
row me through the dead sea.

She is my inspiration
my love, my joys, sorrow and
ultimately mine.

- Nirmal Collectivity

M/s MR Construction
Civil Engineer & Contractors
Prop. M.R. Patkar,
B.E. Civil.
4/18, Pratiknagar, Paud Road,
Kothrud, Pune

माहूर पीठ

सर्व देवमही देवी सर्वतीर्थमयी परा।
विश्वरूपा परमाया जगत्माता च रेणुका॥

श्री आदिशक्ति के साढे तीन पीठों मे एक पीठ माहूर निवासिनी श्री रेणुका माता का है। रजोगुण प्रकृती की माँ रेणुका साक्षात श्री महासरस्वती देवी हैं। इन्हे अक्षय प्रकाश की देवी भी मानते हैं। परशुरामजी विश्वजननी रेणुकादेवी के पुत्र थे। वे बह्मस्वरूपिणी हैं, वे ही वेदमाता हैं, वे वेदस्वरूपी गायत्री हैं, और एकवीरा भी वे ही हैं।

'सैवायं वेद यातात्च गायत्री ब्रम्हरूपिणी' ऐसा उनका वर्णन श्री आदिगुरु दत्तात्रेय ने किया है।

वनानि सरितः शैलाः समुद्राः प्राणिनो मही।
स्थुलरूपमिदं तस्थास्तव मातुः सुरेश्वर॥.... ... इति श्री दत्तात्रेय

मातापुर या माहुर यह स्थान महाराष्ट्र के नांदेड ज़िले में है। इसी क्षेत्र को कृतयुग में आमली ग्राम, त्रेता युग में सिद्धआपूर, द्वापर युग में देवनगर और कलियुग मे मातापुर (माहुर) कहा गया है। श्री रेणुका माँ का मंदिर पहाडी के ऊपर स्थित है। नजदीक ही प्रवरा और पूर्णगंगा इन दो नदियों का संगम है।

यहाँ माता की स्वयंभू प्रतिमा लाल रंग के पत्थर में अवतरित है। प्रतिमा का केवल शिरोभाग ही धरती के ऊपर अवतरित है।

अवतार कथा।

यह उस समय की बात है जब अन्यकुब्ज नगर के राजा रेणू ने कन्या प्राप्ति के लिए श्री विष्णूजी तथा श्री शिवजी की आराधना तथा एक यज्ञ किया। इस यज्ञ में दिव्य वस्त्रअलंकार और रत्नकुंडल धारण किये एक अति सौदर्यवती स्त्री का अवतरण हुआ जो कि श्री अदिती का अवतरण था। चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथी को जन्मी इस अग्निजा कन्या का नाम 'रेणुका' रखा गया।

समय के साथ जब 'रेणुकाजी' उपवर हो गई तो राजा रेणू ने उनके लिये स्वयंवर आयोजित किया, जिसमें उन्होने भृगु वंश के ऋचीक ऋषी के पुत्र श्री जमदग्नि को पति के रूप में स्वीकार किया। राजा ने अपनी बेटी रेणुका को अनेक मूल्यवान उपहारों के साथ कामधेनू तथा कल्पतरू भी भेंट में दिए।

माँ रेणुका ऋषी पत्नी बन कें जमदग्नी के साथ रहने लगीं। उनके पाँच बेटे थे: वसु, विश्वासु, बृहद्वान, बृहत्कण्व और परशुराम। श्री विष्णुजी ने ही परशुराम के रुप में जन्म लिया था। परशुराम नें तपस्या करके देवों से अनेक विद्याएँ प्राप्त की।

माँ रेणुका और जमदग्नि आश्रम में आए सभी अतिथियों का प्रेमपूर्वक स्वागत करते और कल्पवृक्ष तथा कामधेनु की सहायता से सभी अतिथियों को भोजन करा कर तृप्त करते थे। इस कारण उनके आश्रम की कीर्ति चारों और फैलने लगी। एक बार श्री नारदजी ने जमदग्नि के आश्रम की प्रशंसा राजा सहस्त्रार्जून के पास की, जिसे सुनकर राजा अपनी सेना सहित आश्रम देखने के लिए निकल पडा। आश्रम में माँ रेणुका और जमदग्नि ने हमेशा की तरह उनका भी स्वागत किया। आश्रम का वैभव देखकर वे सभी आश्चर्य चकित रह गए। किन्तु राजा को कामधेनु से मोह हो गया। उसने जमदग्नि से कामधेनु हासिल करने की इच्छा जताई। पर उन्होंने इन्कार कर दिया जिससे सहस्त्रार्जुन क्रोधित हो उठा और कामधेनु को बलपूर्वक ले जाने लगा। माँ रेणुका ने उसे ऐसा नही करने को कहा, लेकिन वह नही माना। तभी सहस्त्रार्जून की सेना से लडने के लिए कामधेनू के शरीर से अनेक सैनिक उत्पन्न हो गए। क्रोध का सदा के लिये त्याग कर चुके जमदग्नि प्रतिकार न कर सके और सहस्त्रार्जून ने उनका वध कर दिया और माँ रेणुका पर भी इक्कीस वार किये। जख्मी हालत मे कामधेनु भी इंद्रलोक वापस लौट गई। माँ रेणुका ने अपने पुत्र परशुराम को पुकारा तो

वह तपस्या छोड कर अपनी माँ के पास पहुचे। सब कुछ देखकर वे क्रोधित हो उठे। माँ रेणुका ने उन्हें कहा कि वे वापस जा रही हैं और परशुराम उन्हें कावड में बिठाकर ले चले और जहाँ आकाशवाणी हो, वही पर उनका अंतिम संस्कार कर दें। परशुरामजी ने आदेश का पालन किया और अनेक क्षेत्रों से होते हुए वह माहुर क्षेत्र पहुँचे। वहीं आकाशवाणी हुई। श्री दत्तात्रय ने माँ रेणूका का वंदन किया और बोले, 'हे माते, सुरेश्वरी, सर्व जगत मे आप वंदनीय है। आप एकवीरा हो। आप त्रैलोक्य गामिनी हो। योगी मुनियों के हृदय मे बिंबताद्दात्म्य करने वाली (१७वी) सतरहवी कला हो। हे माँ मेरा प्रणाम स्वीकार करो।

देवी मात स्त्वत्रेवैका वंदनीय सुरेश्वरी।
एकवीरा त्वमेवैका त्रैलोक्ये सचराचरे॥
योगिनां बिम्बताद्दात्म्यकर्ती ससदशीतिच।
एकावानैकरूपेषु या स्थितासि नमोस्तुते॥

माँ रेणूका ने श्री दत्तात्रेय का वंदन स्वीकार किया और श्री परशुराम से बोली कि वे जा रही हैं, पर उनका निवास सदा वही पर होगा।

श्री परशुराम ने अपने माता-पिता का अंतिमसंस्कार किया। वे बहुत दुःखी थे। श्री दत्तात्रेयजी ने कहा कि माँ फिर से आएंगी, पर आप पीछे मुड के मत देखना। ऐसा कहते ही जगत्माता रेणुकाजी भूमी से ऊपर आने लगी। अत्यंत प्रेमपूर्वक जब उन्होने पुत्र परशुराम को पुकारा तो अधीर हो कर परशुरामजी ने पीछे देखा कि माँ रेणुका का तेजस्वी मुख भूमी से उपर आया था। उसी क्षण माँ रेणूका का मुख मूर्तीरूप मे स्थित हो गया। माँ रेणुका 'माहूर' स्थान पर स्थित हो गयीं। उसके बाद परशुरामजी ने श्री गणेशजी के परशु से सहस्त्रार्जून का वध किया।

माहूर यह स्थान श्री दतात्रेय की माँ अनसूया का मायका है। यहाँ पर मातृतीर्थ, दत्तशिखर पर जमदग्नि की समाधी, माँ अनसुया शिखर, आदी दर्शनिय स्थान है।

.....Continued from pg. 6

Hinduism and Islam, in his own subtle ways attempted to narrow the bridge between the two communities. For example, though he resided in a mosque, he kept the fire, which was considered sacred by the Hindus, lit at all times. Also, he planted a 'tulsi' plant, which again was an act which was considered to be close to Hinduism, in the front side of the mosque.

Sai Nath left the human form in 1918. We will never be able to describe the greatness of an incarnation in literal words. But, may we conclude by saying, in this long journey of human evolution he took the entire mankind ahead by yet another step. Pray, may we be able to appreciate the love, compassion and sacrifice it must have taken for such a Himalayan task!

Guru Brahma Guru Vishnu Guru Devo Maheshwaraha
Guru Sakshat Parabrahma
Tasmai Shri Nirmala Devai Namo Namha

"Will ever the day arrive when man will discover through scientific knowledge and experience and earthly manifestation that which the spirits have always known through God, and which our hearts have known through longing? Must we await death in order to establish the eternity of our ideal selves? Will ever the day come when we will feel with our fingers of our hands those great secrets which we now feel only with the fingers of our faith?"

-Kahlil Gibran

The Divine Feminine In Islam

In the present times, the fanaticism that we see is a new development in religion, which in its early history was famous for its tolerance and respect for other religions, for example in Islam. The fundamentalism that characterises the behaviour of some of today's Muslims is in fact anti-Koranic. If we want to analyse it, we can see how ideas and actions lacking in love and compassion have lead to misogyny, terrorism and mass conditioning. These are due to an extreme projection of the human mind towards ego.

This has happened when followers of Islam stopped worshipping the female aspects of God turning only to the male qualities of the unconscious. In this manner, the Islamic communities have replaced the desire for spiritual ascent with that for economic, political and cultural power, exalting always more the religious and moral intolerance (especially against the women).

But it wasn't always like that.

Many researches show how the original Islam ascribed female qualities to the Divine and professed, consequently, more universal religious values.

If we compare the characteristics of the God described in the Bible (Yahweh) with the one described in the Koran (Allah), we see that the latter doesn't have any gender and is never called with names as "Lord" or "Father". On the contrary, it takes on typically female valences as forgiveness, kindness, love, providence and universal compassion. One of His most important names is Al-Rahman: "The All-Compassionate", from the Arabic 'Rahma', which comes from the word 'Rahim' meaning womb. It is surprising that in Sanskrit language, the word "Alla" is a synonym of Amba or Akka, both meaning Mother Goddess, and is used in the chants invoking Goddess Durga. Thus, Allah means mother, Goddess and Mother Goddess.

Even Muhammad himself showed these qualities, often forgiving the enemies who committed many atrocities against him and his followers. He had a profound respect for all the religions and incarnations, for Abraham, Moses, Christ and Mary, to whom he directed many prayers, contained in the Koran even now. He regarded Her as the most marvellous of all women, a high adept

and living example of the pure and holy life. Later Koranic commentaries describe Mary as an intervening force between God and humanity. This intervening force is characterised by Allah's mercy, forgiveness, sweetness and humility, the embodiment of Allah's love for creation.

When Muhammad retook Mecca he began a programme of removing the pagan influences from the Kaaba, the most holy of Muslim sites. He removed many frescos and images that he considered inauspicious but he specifically left in the walls a fresco of the Virgin Mary and her child.

In one of the most powerful Hediths (prophetic sayings of Muhammad) it is reported that Muhammad said, "Paradise is at the feet of the Mother".

Fatimah is another prominent female in the Islamic tradition: She is an incarnation of Gruha Lakshmi Tattwa, born as Mohammed's daughter. It is singular that, in such masculinist tradition like the Islamic one, she was honoured and revered as a divine being. Muhammad himself used to say "Allah, the Most High, is pleased when Fatimah is pleased. He is angered when Fatimah is angered!" He regarded her as a primordial woman, a symbol of divine womanhood, and gave her many holy names, such as: *Siddiqah* (The Honest, The Righteous), *Al-Batool* (Pure Virgin), *Al-Mubarakah* (The Blessed One), *Al-Tahirah* (The Virtuous, The Pure), *Al-Zakiyah* (The Chaste, The Unblemished), *Al-Radhiatul Mardhiah* (She, who is gratified and who shall be satisfied), *Al-Muhaddathah* (A person other than a prophet, that the angels speak to), *Al-Zahra* (The Splendid), *AlZahirah* (The Luminous).

Shias associate Fatimah with Sophia, the divine wisdom, which gives birth to all knowledge of God. And that is a clear attribute of the Great Mother. Shri Mataji, speaking about Shri Fatimah (Shri Fatimah puja 1998) says that the Gruha Lakshmi Tattwa has been created to annihilate the hatred through a source of peace and love. The main principle of one Gruha Lakshmi is the respect for own chastity, morality and virtue. It is evident that, had these qualities of Shri Gruha Lakshmi be present in todays Islam, women wouldn't have lived in this condition of captivity and absurd submission to men and men wouldn't have continued feeding the hatered of fellow men. *Jihad* would exist only in its f"war

"सदा याद रखें कि प्रेम की दिव्य शक्ति के सम्मुख सारा असत्य लडखडा जाता है। असुरी शक्ति कुछ समय के लिए रह सकती है, परन्तु अन्ततः उसका पतन हो जाएगा। यह सब मेरा कार्य है, मुझ पर छोड दें।"

Sanjiv Sondhi
SPONTANEOUS TRAVEL SERVICES PVT. LTD.
Chandigarh
Ph. 0172 721772, 721186

"सहजयोगी का पहला लक्षण ये है कि वो शान्त चित्त होता है। और अत्यन्त सबल। किसी से डरता नहीं। उसका जीवन अत्यन्त शुध्द होता है। और आत्मा के प्रकाश से वो सारी दुनिया में तेज फैलाता है। जो आदमी प्रेम नहीं कर सकता वो हमारे विचार से सहजयोगी बिल्कुल है ही नही।"

original meaning of "war against the negative tendencies within us" and the Muslim children would not be trained in to be voilent in the so called *koranic schools.*

Muhammad also spoke about the Kundalini. He had told that he had a mystic experience (*mehraj*) that elevated him through the seven heavens to the realm of God Almighty at the resplendent Sidrath where he communed with God, received his divine visions and instructions and was placed on the inexorable course of his life-mission to establish Islam. Muhammad was escorted by the Archangel Gabriel, but the vehicle upon which he rode was the *Buraq:* a beautiful white horse that had wings and had face of a woman, clearly suggesting that the great power by which Mohammed was elevated to the level of supreme consciousness was ultimately feminine in nature. Shri Mataji said, in fact, that the Buraq is nothing but the Kundalini: the female aspect of God that nourishes, purifies and preserves every one of us, leading the seekers in their ascent, till to give them the union with God.

In conclusion, every teaching, philosophy or religion that professes the pure and absolute truth, is aware that the only entity able to give safety, liberation and awareness to human beings is in nature. Thus no spiritual emancipation is possible without the guidance support and nourishment of a Mother. She is the energy that incarnates as pure desire of ascent and that emanates the universal love of God!

This is the reason why such energy has always been present by the side of all divine incarnations, providing them courage, love and wisdom and offering to humanity wonderful examples of female virtue.

Islam was born under the auspicious presence of Fatimah, the manifestation of Gruha Lakshmi and the reincarnation of Vishnu Maya. May it, one day, recognise her importance and flourish again at the light of the teachings of Shri Mataji Nirmala Devi: the greatest incarnation of all times !

On the face of the earth there is no one more beautiful than you
Wherever I go I wear your image in my heart
Whenever I fall in a despondent mood I remember your image
And my spirit rises a thousand fold
Your advent is the blossom time of the universe
O Mother you have showered your choicest blessing upon me
Also remember me on the Day of Judgement
I don't know if I will go to Heaven or hell
But wherever I go, please always abide in me!
(A Sufi ode to the Divine Mother)

Devendra Goel
SATYA APPLIANCES PVT. LTD.
Manufactures of
Pressure Cooker
Ghaziabad
Ph. 0120-4700352, 4703012

उल्टा कुँआ – संत कबीर

कबीर सूषिम सुरति का, जीव न जाणे जाल।
कहै कबीरा ढूर करि, आतम अदिष्टि काल।।

कबीर ढास जी कहते हैं की कुंडलीनी के सूक्ष्म (सुषुमना के) मार्ग के रहस्य को जीव सहज से नहीं जान पाता अर्थात जीवात्मा सहजावस्था के सूक्ष्म मार्ग का रहस्य नहीं जानती। इसका रहस्य जानने के लिए वे कहते है कि, हे जीव! अपनी आत्मा का वह अज्ञान ढूर कर, जिसके कारण तू संसार को ही सत्य समझ बैठा है, तभी तुम्हें उस मार्ग का ज्ञान हो सकता है। अतः कबीरढासजी सहजावस्था को प्रसि के लिए कुंडलिनी और सुषुमना के मार्ग पर स्थिर रहने के रहस्य और उसको अनुसरण करने के महत्त्व को समझा रहे हैं, अर्थात वे आत्मा का परमात्मा से योग कराने में कुंडलिनी शक्ती के महत्त्व को बता रहे है।

मूल बंध एक पावा, तला सिद्ध गणस्व रावा।
तिस मूलहि सूल मिलाऊँगा, तो फिर बहुरि न भौजलि आऊँगा ।।
मूलाधार पिंड में एक स्थल है जहाँ मूलशक्ति (कुंडलिनी) है। स्तंभ के नीचे सिद्धसदन गणपति निवास करते हैं। कबीर ढास जी कहते हैं कि इस मूल शक्ति को सृष्टी के मूल उस ब्रह्म से मिला के रखूँगा और फिर इस संसार में कभी नहीं आऊँगा अर्थात आवा गमन के बंधन से मुक्त हो कर मोक्ष प्राप्त कर लूंगा।

आकाशे मुखि औंधा कुंआ, पाताले पनिहारि।
ताका पाणी कोई हंसा पिये, विरला आढि विचार।।

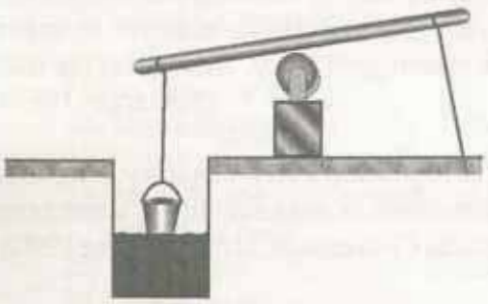

कबीर ढास जी विचार कर कहते हैं कि मनुष्य के सिर के ऊपर का आकाश एक औंधे कुँए जैसा है (कुँए का मुँह नीचे की और है) और उसमें पानी भरने वाली पनिहारिन (कुंडलिनी) मनुष्य के शरीर में नीचे की ओर है। इस कुँए का पानी कोई विरला मनुष्य ही पीता है (उन ढिनों सिर्फ विरले मनुष्यों की ही कुंडलिनी सहस्त्रार तक जाती थी) और सिर के उपर स्थित कुँए के पानी (ब्रह्ममतत्त्व) का रसास्वाढन करता है।

सुरति ढीकली लेज ल्यों, मन चित ढोलन हार।
कंवल कुँआ में प्रेम रस, पीवै बारम्बार।।
कबीर ढास जी कहते हैं कि–जिस तरह से ढीकली में बाल्टी, रस्सी तथा निकलने वाले की मढढ से बार–बार पानी कुँए से निकाला जाता है उसी प्रकार साधक कुंडलिनी रूपी ढीकली से, जिसमें लगन की रस्सी और बाल्टी स्वरूप मन जिसके बास मे है, सहस्त्रार ढल कमल रूपी कुँए से प्रेम के अमृत रस (ब्रह्मतत्त) का बार बार रस स्वाढ करता है।

ALL ABOUT CANCER

"You will be surprised, all those patients of deadly diseases, like cancer, etc, whom I have cured, all of them without exception were the victims of fake gurus and tantrikas. I have not seen any cancer patient who was not connected with a false guru. That's why it is said that doctors cannot cure cancer." (Speech, Delhi, 18/8/79)

"A person's Kalki Chakra catching means that he will be down with a horrible disease like Cancer, may be leprosy or may be that he is about to collapse into some sort of calamity." (Talk on Shri Kalki)

"For cancer best treatment is of water, i.e. putting feet in the river, sea or in the water at home with the photograph. Water has the dharma of cleansing and hence Shri Vishnu and Dattatreya responsible for the dharma of human beings are to be worshipped. They help you to cure also the local deity of the chakra that is attacked. Put the patient before the photograph with the candle and his feet in the water, bring down your hands across the sympathetic nervous system towards the water. The patient will cool down gradually. If he gets realization, then he is cured." (Shri Mataji's letter to Dr Raul)

"There are two sides of life, left side and right side, when they meet (when one side is overactive), you get the 'psychosomatic diseases'. If the Kundalini rises what happens is that it nourishes those centres. But suppose you are using right side too much, left side breaks up. Then what happens is that your connection with the main is lost. You are on your own and Cancer starts. Can be cured not at a galloping stage but at an early stage. We have also tried some galloping stage patients." (Talk to doctors 6/4/97. New Delhi)

Breast cancer : "The sense of chastity in the Indian women is so great that nothing can deter them as long as they are chaste. But if they are not chaste, then fear settles in them 'very' fast. Chastity is the strength of women. And that is why, those women who have fear, mostly, have a problem of their chastity being challenged. A woman, who is frightened that her chastity may be disturbed, also can develop a problem with the heart chakra. Such women can develop breast cancer, breathing troubles, and other kinds of frightening diseases on the emotional level also." (Talk on the Heart Chakra, Delhi, 1/2/83)

Blood cancer : "Blood cancer is the result of speediness. So one has to be very careful that our spleen must be alright."
"In the left Nabhi area is the spleen. The spleen is a speedometer and also an adjuster. When it adjusts and it is not properly done due to sudden change, it causes problem. So it has to suddenly provide its energies to either increase or decrease the flow of the red blood corpuscles. That's how the spleen goes crazy. This is also the root cause of Blood Cancer for people who are hectic." (Shivaratri 1987)

"The spleen produces red blood corpuscles for all emergencies. Modern life is always an emergency. Constant shocks to the spleen make it crazy and vulnerable to cancer. At such a moment of vulnerability if something triggers from the left side then blood cancer accrues." (Address to Medical Conference, Moscow, June 1990)

Throat cancer : "If you smoke too much then this Vishnumaya gets very angry. She, she is the one who then causes cancer. She can spoil you throat. I mean all kinds of ear, nose, throat problems can come in with the smoking because she doesn't like that smoke. ... With that if you smoke, smoking, you can become also very much vulnerable to cancer of the throat."
"Another thing which people do not know is the mantras. Now she [Shri Vishnumaya] is the Mantrika, she is the one who gives the power to the mantra. Now if you are not connected to this divine power then there's a short circuit takes place, and if you go on saying this mantra you develop all the troubles of the throat, throat cancer. You can develop also stomach, in the stomach problems, because it is Krishna and Vishnu are the same, you might develop also the problem of Virata." (Shri Vishnumaya Puja, New York, 19/7/92

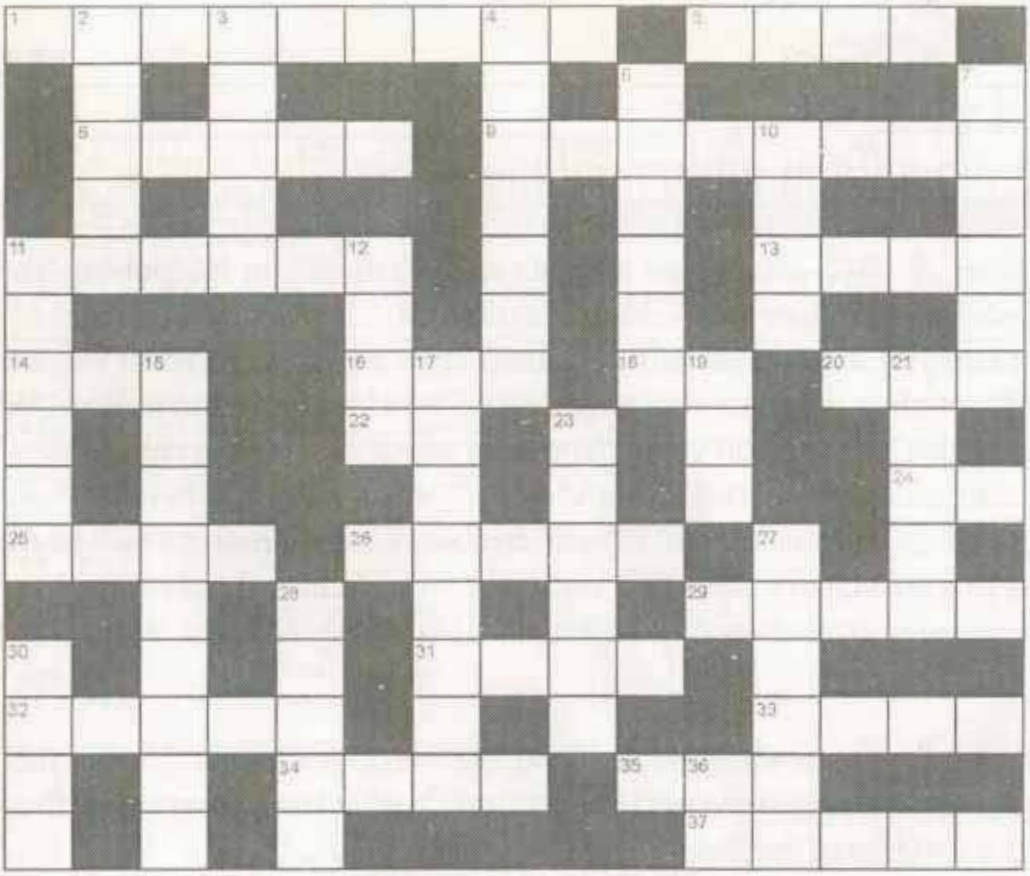

Across:

1. Sacred rocky outcrop (eg. Black stone of Mecca)
5. The mystic
8. Region which was ruled by Maharana Pratap
9. Nishkalanka or Blemishless
11. Cardiac plexus
13. ....for ever and ever. _____
14. One of the twin sons of Lord Rama
16. Khalil Gibran's book 'Jesus the Son of _____'
18. Sa Re Ga Ma ___
20. Moon channel
22. Sound of the genesis of universe.
24. In this name '___' means 'energy' and 'Dha' means 'to hold'.
25. Synonym for Amba or Mother in Sanskrit.
26. One yuga before Kaliyuga.
29. Offering.
31. Eight stanzas of Adi Shankaracharya described the _____.
32. Incarnation in Sanskrit.
33. One of Shri Vishnu's names.
34. The sacred ash which Sai Nath used to give for various remedies.
35. The benevolent king.
37. One of the $3^{1/2}$ peeth of Adishakti.

Down:

2. 5^{th} avatar of Shri Vishnu
3. Moses called him God
4. _____ is archangel Gabriel.
6. Which great Maharana of Mewar fought against Akbar.
7. When there is not the other.
10. He was told by God to build a huge Arc.
11. Nizamuddin _____ is known to world as 'Dehelvi'.
12. Mode of operation of Mahakali (Guna).
15. Celestial abode of Shri Vishnu.
17. One of the 12 Jyotirlingas.
19. Primordial.
21. Name of Parvati when manifesting without Shiva to destroy evil powers.
23. Daughter of the prophet Mohammed.
27. Creater of universe.
28. Lord of water.
30. Collective Atmosphere.
36. One of the Beej Akshar of Mooladhar.

Answers

Across : 1)Swayambhu 5) Sufi 8) Mewar 9) Niranjan 11)Anahat 13) Amen 14) Luv 16) Man 18) Pa 20) Ida 22) Om 24) Ra 25) Akka 26) Krita 29) Arpan 31) Atma 32) Avtar 33) Hari 34) Udhi 35) Ram 37) Mahur

Down : 2)Waman 3)Yaweh 4)Hanuman 6)Pratap 7)Ananya 10)Noah 11) Aulya 12) Tamo 15) Vaikuntha 17) Amarnath 19) Adi 21) Durga 23) Fatima 27) Brahma 28) Varun 30) Sama 36) Am

In September of 1942, after about a month and a half stay in Nagpur jail Shri Mataji's father was to be shifted to Vellore jail (Vellore is a small city close to Madras). Shri Mataji along with her family went to meet him at the railway station. There Shri Mataji's father was accompanied by another freedom fighter, who got very angry with Shri Mataji and said to Her, "Why do you need to fight the British? You are too young. You are a source of worry to your Mother". On this, Shri Mataji's father called Her on his side and said, "Do not pay heed to what this old man is saying. I am very proud of you and if all my children work for the nation I will be the proudest father". Turning to Shri Mataji's mother, "You come from Jadhav family (family of Shivaji's mother) and why are you so much worried? Nirmala is like Lakshmi Bai of Jhansi who fought the British".

Shri Mataji and Her family sacrificed a lot during the freedom struggle. During this time Shri Mataji also wrote a poem of great respect of the Mother land at Her young age of fourteen years and it was sung by children of the family along with other songs.

- My Memoirs by Babamama

YUVADRISHTI

yuvadrishti@yahoo.com

Reg. No. ________ - ______

(FOR YUVADRISHTI USE)

SUBSCRIPTION FORM

(PLEASE FILL IN CAPITALS)

Name (IN BLOCKS) ____________________

Address ____________________

____

City ____________________ PIN ____________________

State ____________________

Email ____________________ Phone

Cash/DD No. ____________________ Dt. __________ Drawn on __________

Of Rs. ____________________

DD should be sent in the favour of 'Yuvadrishti' payable at Pune.

Signature

Address for correspondence :

Yuvadrishti, C/o Sahaja Yoga Kendra

Plot No. 79, Survey No.98, Bhusari Colony, Kothrud, Pune-38, Maharashtra, Phone : 020-5286105

"....राणा प्रताप का किस्सा है, मेवाड के। के जब वो चढाई में गए, तो उनके सैनिकों ने सोचा कि भाई हम तो हारने वाले हैं। तो उनसे कहने लगे, आप वापस जाईये, क्योंकि हम चाहते हैं आप बच जाएँ, मेवाड के लिये। सो (तो) उन्होने कहा, ङ्गनही, तुम लोग सब वापस जाओ। मैं तो ऐसे ही डँटा रहूँगा, क्योंकि गण मेरे साथ खडे हुए हैं। सहज योगी थे ना वो भी। आप को जाना है तो आप लोग जाईयें, मै तो ऐसे ही डँट कर खडा रहूँगा। क्योंकि गण मेरे साथ हैं।...."

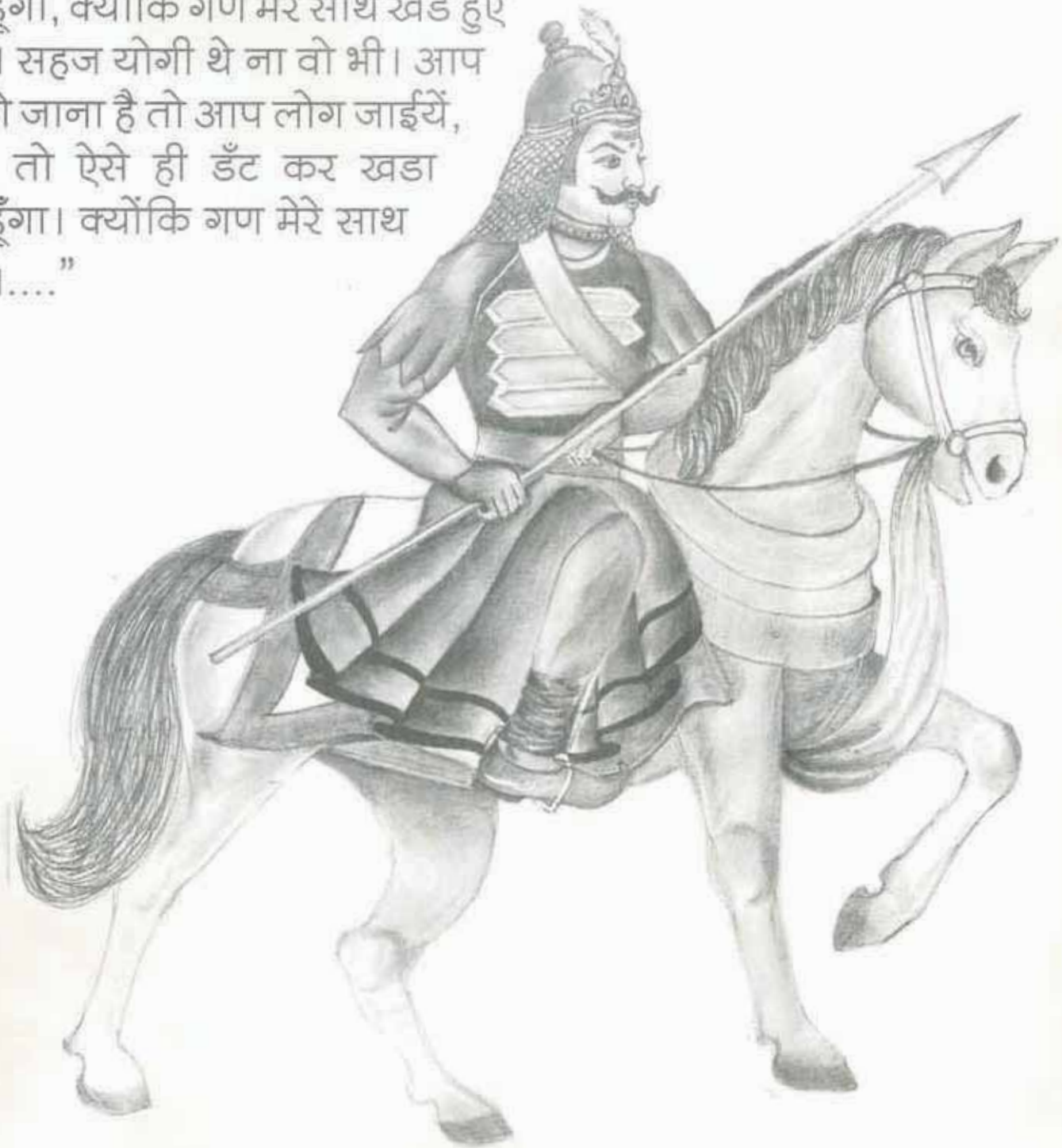

The Virgin of the Rocks, 1508
-Leonardo da Vinci